चार भूमियों का प्रशिक्षण

प्रथम प्रशिक्षण की रूपरेखा

मार्च 2019

दर्शन

परमेश्वर की प्रत्याशा क्या है?

मलाकी 1:11

उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक सब लोगों में सब जगहों पर परमेश्वर का नाम महान होगा। (हाथों को हिलाते हुए)

परमेश्वर की योजना क्या है?

मत्ती 16:16–19 तथा मत्ती 28:18–20

प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा। हमें जाना है, सुसमाचार सुनाना है, शिष्य बनाना है और उन्हें एक साथ जोड़ना है। तब हमें उन्हें यही सब कुछ करना सिखाना है। (हाथों को हिलाते हुए)

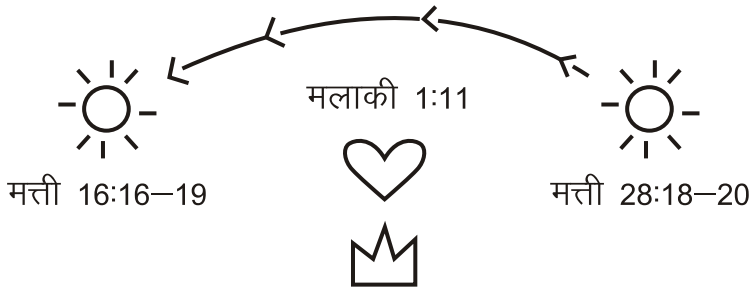

इन आयतों का अध्ययन करने के बाद नीचे दिए हुए चित्र को बनाइए जो इस बात की याद दिलाने में सहायक होगा कि सब लोगों तक सब जगहों पर सुसमाचार पहुंचाने हेतु परमेश्वर की योजना क्या है।

यह समझाएं कि परमेश्वर का राज्य किस प्रकार से एक खेती करने के समान वृद्धि करता है।

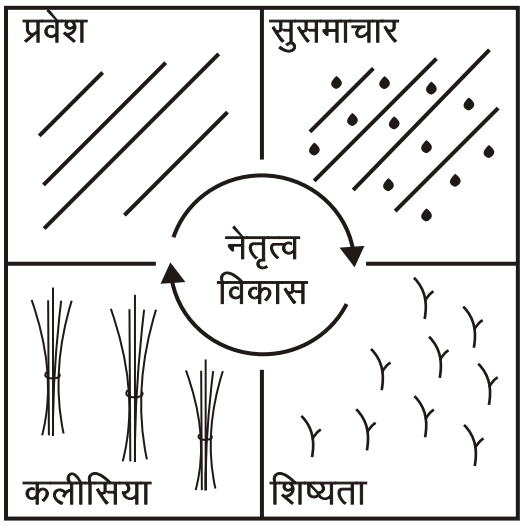

प्रवेश (भूमि 1)

दो प्रकार के लोग होते हैं : वे लोग जिन्हें आप जानते हैं और वे लोग जिन्हें आप नहीं जानते। हमारे जीवन में पाए जाने वाले अविश्वासियों के बारे में विचार करने के लिए हम एक ओईकोस मैप सृजित करते हैं। उन लोगों तक कैसे पहुंचे जिन्हें हम नहीं जानते, यह जानने के लिए हम लूका 10:1–11 का अध्ययन करते हैं।

OIKOS

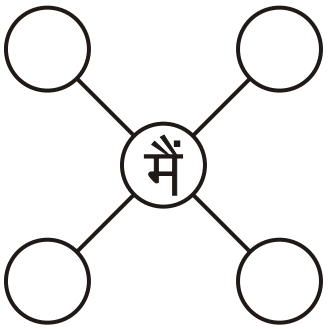

यूहन्ना 1:35–42 पढ़ें और उन प्रश्नों का उत्तर दें :

किसने विश्वास किया?

सबसे पहले किसके पास जाकर उसने बताया?

सबसे पहले अपने सगे भाई शमौन के पास जाकर उसे बताया (आयत 41)।

OIKOS एक यूनानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है, परिवार, मित्र और पड़ोसी।

एक OIKOS मैप बनाएं।

अपने OIKOS के लिए प्रार्थना करें।

लूका 10

लूका 10:1–11 पढ़ें और इस चार्ट को भरें।

यीशु ने चेलों से क्या करने को कहा?	यीशु ने चेलों से क्या नहीं करने को कहा?
• 2x2 (आयत 1) • प्रार्थना (आयत 2) • जाओ (आयत 3) • कहो "शान्ति" / घर में जाकर अभिवादन करो (आयत 5) • घर में ठहरो (आयत 7) • खाओ और पीयो (आयत 7) • बीमारों को चंगा करो (आयत 9) • परमेश्वर के राज्य / सुसमाचार की घोषणा करो (आयत 9) • अपने पावों से धूल झाड़ लो (आयत 10)	• अपने साथ बटुआ, झोली, जूते मत लो (आयत 4) • मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो (आयत 4) • घर–घर न फिरो (आयत 7)

झुण्ड से प्रेरितों 16:11–15 या प्रेरितों 16:25–40 पढ़वाएं। लूका 10 और प्रेरितों 16 अध्याय में क्या समानता है? हरेक समानता के लिए लूका 10 के चार्ट में सही का निशान बनाएं (✓)।

प्रेरितों के काम 16:11–15

- 2x2 (आयत 13 "हम")
- प्रार्थना (आयत 13 – प्रार्थना करने के लिए एक स्थान को गए)
- जाओ (आयत 13)
- सुसमाचार (आयत 13,14)
- घर में ठहरो (आयत 15)

प्रेरितों के काम 16:25–40

- 2x2 (आयत 25 – पौलुस और सिलास)
- प्रार्थना (आयत 25)
- सुसमाचार (आयत 31–32)
- खाओ और पीयो (आयत 34)
- घर में ठहरो (आयत 34)

निष्कर्ष : लूका 10:1–11 और प्रेरितों के काम के शास्त्र खण्ड के माध्यम से हम 2x2 जन एक साथ जाने, प्रार्थना करने, सुसमाचार सुनाने और विश्वास करने वाले परिवार में ठहरने का एक पैटर्न देख सकते हैं।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आप कहां जाकर लूका 10 की गतिविधि करेंगे।

सुसमाचार (भूमि 2)

"2–3–4"

2: दो भाग हैं : हमारी कहानी (गवाही) और यीशु की कहानी (सुसमाचार)

3: हमारी कहानी के 3 भाग हैं :

1. यीशु से मुलाकात होने के पहले का जीवन
2. हम यीशु से कैसे मिले
3. यीशु से मुलाकात होने के बाद का जीवन

एक सहभागी के साथ अपनी 2 या 3 मिनट की गवाही बांटें।

4: यीशु की कहानी के 4 भाग हैं –

1. सृष्टि
2. पाप
3. यीशु – मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरूत्थान (1 कुरिन्थियों 15:3–4)
4. चयन

आपके हाथ को काम में लाते हुए सुसमाचार बांटने/सुनाने का सरल एवं बार–बार काम में आने वाला तरीका नीचे दिया गया है। "हाथों का सुसमाचार" अपने सहभागी को कम से कम 3–5 बार सुनाएं।

1. यह परमेश्वर है। (उंगलियों)
यह मनुष्य है। (अंगूठा)

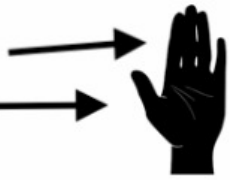

2. शुरू में मनुष्य परमेश्वर के साथ एकदम सही रिश्ता था।

3. फिर मनुष्य ने पाप किया। इसके कारण हमारा रिश्ता, परमेश्वर के साथ टूट गया। हम भी सब ने पाप किया है और हमारा रिश्ता भी परमेश्वर के साथ खाराब हो गया। इस के कारण हमारे जीवन में शान्ति नहीं है।

4. हम अपने रिश्ते को ठीक करने के लिए बहुत कुछ कोशिश करते हैं। हम परमेश्वर को खुश करने के लिए बलिदान देते, सेवा करते और भक्ति करते हैं। लेकिन फिर भी हम परमेश्वर के साथ रिश्ता नहीं जोड़ पाते। हम अंदर में मरे हुए है।

5. पवित्र बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। इसलिए उसने हमें मरने से बचाने का रासता दे दिया। उसने अपना बेटा यीशु मसीह दे दिया।

6. यीशु हमारी पापों की सज़ा अपने ऊपर ले लिया। वह अपना जीवन क्रूस पर पवित्र बलिदान के रूप में दे दिया। यीशु हमारे जगह पर मारा गया।

7. यीशु गुफा में गड़ा गया।

8. तीन दिन बाद, जैसे यीशु की कहने के अनुसार, वह फिर से जीवित हो गया। वह अभी भी जीवित है।

9. प्रभु ने हमें मुक्ति का उपहार दे दिया। अगर हम, यीशु पर विश्वास करें, पापों से मन फिराएं, और प्रभु यीशु को अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करे, तो वह अनन्त तक हमारे सारे पाप को साफ़ कर देगा।

10. अब हम परमेश्वर के साथ यीशु के द्वारा, हमारा पाप क्षमा होकर, एकदम सही रिश्ता, जैसे शुरु में था, फिर से होगा। हम अनन्त जीवन मिल सकेंगे।

11. क्या आप यीशु पर विश्वास करके उसके पीछे चलना चहोगे?

रोमियो 10:9 "... कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

3. प्रत्युत्तर

   प्रेरितों के काम 17:32–34 पढ़ें।

   इस शास्त्रांश में सुसमाचार के प्रति कौन से 3 प्रत्युत्तर पाए जाते हैं?

   1. कुछ ने ठ्ठठा किया (आयत 32) = लाल रोशनी
   2. कुछ ने कहा, "यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे" (आयत 32) = पीली रोशनी
   3. कुछ ने विश्वास किया (आयत 34) = हरी रोशनी

लाल रोशनी वालों से हम कहते हैं –

"मेरी कहानी सुनने हेतु आपको धन्यवाद" और आगे बढ़ जाते हैं।

हम उनसे पूछ सकते हैं, "क्या कोई बात है जिसके लिए मैं प्रार्थना कर सकता हूं!"

ऐसा करने से परमेश्वर को अवसर मिलता है कि वह उनके जीवनों में अपनी शक्ति एवं अपने प्रेम को दिखा सके।

पीली रोशनी वालों से हम फिर मुलाकात करके उनके साथ प्रभु यीशु मसीह की शक्ति के बारे में बता सकते हैं। अपनी कहानी बताने के बाद उनको सुसमाचार सुना सकते हैं।

यहां पीली रोशनी वालों के लिए 3 कहानियां दी गयी हैं –

सामर्थ्य की कहानियां

1. प्रकृति के ऊपर यीशु की सामर्थ्य – मरकुस 4:35–41
2. दुष्टात्माओं के ऊपर यीशु की सामर्थ्य – मरकुस 5:1–20
3. बीमारियों के ऊपर यीशु की सामर्थ्य – मरकुस 5:25–34

सामर्थ्य की पहली कहानी सुनाने का अभ्यास करें।

हरी रोशनी वालों के लिए हम शिष्यता का आरम्भ करते हैं।

शिष्यता (भूमि 3)

सर्वप्रथम शिष्यता की शुरूआत करते समय नए विश्वासियों को सिखाने के लिए 7 प्राथमिक सबक होते हैं। हरेक सबक में एक कहानी और अध्ययन करने हेतु एक आज्ञा होती है जो 8 कदमों वाली प्रक्रिया से सीखी जाती है।

1. मन फिराओ और विश्वास करो	कहानी : लूका 19:1–10 आज्ञा : मरकुस 1:14–15
2. बपतिस्मा लो	कहानी : प्रेरितों 8:26–39 आज्ञा : मत्ती 28:18–20
3. जाओ और बताओ	कहानी : यूहन्ना 4:1–42 आज्ञा : मरकुस 16:15
4. प्रार्थना करो	कहानी : मत्ती 6:5–15 आज्ञा : मत्ती 6:9
5. प्रेम करो	कहानी : लूका 10:25–37 आज्ञा : मत्ती 22:37–39
6. दान दो	कहानी : मरकुस 12:41–44 आज्ञा : मत्ती 6:1–4
7. प्रभु भोज में शामिल हो (पवित्र ब्यारी)	कहानी : लूका 22:7–20 आज्ञा : मत्ती 26:26–29

8 कदमों वाली प्रक्रिया

शिष्यता हेतु नए विश्वासियों के साथ बैठक करने के समय काम में लाने हेतु यहां प्रक्रिया दी गयी है। यह प्रक्रिया तब भी काम में लायी जाएगी जब कलीसिया एक साथ मिलकर सभा करेगी।

1. प्रार्थना करो।
2. आराधना करो।
3. समीक्षा करो।
    (अ) हमने पिछली बैठक में क्या सीखा था?
4. ज़िम्मेदारी तय करो –
    (अ) आपने पिछली बैठक के बाद किसे सुसमाचार सुनाया?
    (ब) आपने पिछली बैठक में जो कुछ सीखा था उसका पालन कैसे किया?
5. नयी शिक्षा
    (अ) यह कहानी हमें यीशु / परमेश्वर के बारे में क्या सिखाती है?
    (ब) यह कहानी हमें मनुष्य के बारे में क्या सिखाती है?
    (स) इस कहानी में ऐसी कौन सी बात है जो हमें नहीं करना चाहिए?
    (द) इस कहानी में ऐसा कौन सा नमूना है जिस पर हमें चलना चाहिए?
    (इ) इस कहानी में ऐसी कौन सी आज्ञा है जिसे हमें पालन करना ज़रूरी है?
6. अभ्यास करो
7. योजना बनाओ
8. प्रार्थना करो

इस प्रक्रिया को समझाने के बाद 4–6 जनों का समूह बना कर 8 कदमों वाली प्रक्रिया जो एक आज्ञा के साथ पायी जाती है उसका अभ्यास करें। यदि समय बचे तो फिर से दूसरी आज्ञा के साथ उस प्रक्रिया का अभ्यास करें।

कलीसिया (भूमि 4)

सरल कलीसिया अध्ययन

आयतों को पढ़कर उत्तर दें :–

1) कलीसिया **कौन है?**

प्रेरितों 2:37–41

विश्वासी जिनका बपतिस्मा हो चुका है।

2) कलीसिया **कहां** मिलती है?

प्रेरितों 2:46, रोमियों 16:3–5

कलीसिया घरों में, चर्च भवनों में या एक पेड़ के नीचे एकत्रित हो सकती है।

3) कलीसिया **कब** मिलती है?

इब्रानियों 10:24–25

जब तलक कलीसिया नियमित रूप से एकत्रित होती रहे तब तलक समय कोई मुद्दा नहीं है।

4) कलीसिया क्यों मिलती है?

1 कुरिन्थियों 10:31

परमेश्वर की महिमा के लिए।

5) कलीसिया क्या करती है?

प्रेरितों 2:37–47

मन फिराव, बपतिस्मा, शिक्षा, संगति, पवित्र–ब्यारी, प्रार्थना, पवित्र आत्मा, भजन, आश्चर्यकर्म, प्रेरित / अगुवे, दान, प्रेम, आराधना, सुसमाचार प्रचार / वृद्धि।

कलीसिया क्या करती है? के ऊपर विचार करने के बाद संकेत का चित्र बना कर कलीसिया की परिधि को समझाइए।

लक्ष्य–निर्धारण

चार भूमियों के फ्रेमवर्क को काम में लाते हुए हरेक भूमि के लिए जिसका आपने प्रशिक्षण दिया है, लक्ष्य निर्धारित कीजिए। हरेक से कहिए कि वे चार भूमियों का चित्र बनाकर हरेक भूमि में अपने–अपने लक्ष्यों को लिख लें। अब समूहों में इन लक्ष्यों के लिए प्रार्थना कीजिए।

प्रवेश

- लूका 10 को पूरा करने के लिए 3 गांवों की सूची बनाओ।

सुसमाचार

- आप इस माह में कितनी बार सुसमाचार प्रचार करेंगे?

कलीसिया

- आप किसे प्रशिक्षण दे सकते हैं? (कलीसियाओं को, विश्वासियों को, मित्रों को)

शिष्यता

- पीली रोशनी की कहानी आप किन्हें बताएंगे?
- सात आज्ञाओं का पालन किनके साथ आप करेंगे?

प्रस्तावित कार्य–तालिका

	दिवस 1	दिवस 2
प्रातः कालीन सत्र – 1	• दर्शन + 4 भूमियों का चित्र • Oikos	• समीक्षा दिवस 1 (दर्शन, भूमि 1–2) • गवाहियों एवं सुसमाचार प्रचार का अभ्यास
प्रातः कालीन सत्र – 2	• लूका 10 +प्रेरितों के काम 16 अध्याय का अध्ययन	• 3 प्रत्युत्तर, सामर्थ्य की पहली कहानी का अभ्यास • 7 आज्ञाओं और 8 कदमों को समझाइए • आज्ञा 1 का 8 कदमों के साथ अभ्यास कीजिए।
भोजन	अवकाश	अवकाश
दोपहर सत्र – 1	• गवाही+अभ्यास सुसमाचार प्रचार+अभ्यास	• आज्ञा–2 का 8 कदमों के साथ अभ्यास कीजिए।
दोपहर सत्र – 2	• सुसमाचार प्रचार का अभ्यास • गृह कार्य देकर भेजें	• सरल कलीसिया अध्ययन • लक्ष्य–निर्धारिण